International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मुग़ल काल में शाही महिलाओ की शैक्षिक स्थिति

पवन कुमार

प्रवक्ता इतिहास

रा. व. मा. वि. उखलचना झज्जर

सारांश:-

मानव जीवन में शिक्षा का अधिकं महत्व है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य ने अपना विकास किया। कालांतर से विभिन्न शासक वर्गों ने शिक्षा के समुचित प्रबंध करने शुरू कर दिए थे। प्राचीन काल से ही शिक्षा का स्वरूप राजसी और साधारण वर्ग के लिए अलग अलग रहा है। भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। भारत 'विश्वगुरु' कहलाता था। प्राचीन काल में इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन का यथार्थ दर्शन कराती है। तथा इस योग्य बनाती है कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जाननेवाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिंदू अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। **प्रस्तुत लेख में मुगलकालीन शाही महिलाओ की शैक्षिक स्थिति के बारे में बताया गया है।**

मुगल काल की शाही महिलाओ की शैक्षिक स्थिति

प्राचीन काल से ही पुरुष और स्त्री दोनों शिक्षा ग्रहण करते रहे है जिसके साक्ष्य हमे साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त होते है । वैदिक काल से हमे अपाला, घोषा आदि विदुषी स्त्रियों के बारे में जानकारी मिलती है । जो महिलाये उच्च वर्ग से थी उनकी शिक्षा का विशेष प्रबंध किया जाता था । उस समय महिलाये वाद विवाद में भाग लेती थी । ऐसा कहा जाता है कि स्मृतिकाल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में गिरावट आने से उनकी शिक्षा का अधिकार भी उनसे छिना जाने लगा , लेकिन फिर भी धनि वर्ग एवं राजसी परिवारों की लड़कियों की शिक्षा की अवहेलना नहीं की जाती

थी । स्त्रियों को ललित कलाओ जैसे संगीत, चित्रकला, साज सज्जा आदि की शिक्षाए दी जाती थी । पाणिनि ने लड़कियों के एक छात्रावास का उल्लेख किया है । साधारण परिवारों में आर्थिक कमजोरी के चलते शिक्षा ग्रहण करना मुश्किल था । बौद्ध काल में महिलाये भिक्षुणी का जीवन यापन कर बौद्ध धर्म का प्रचार करती दिखाई देती है । मुस्लिम शासन काल में अनेक धनी एवं शाही परिवार लड़कियों को पढ़ने के लिए शिक्षक रखा करते थे । धीरे धीरे लोगो के अंदर यह अन्धविश्वास पैदा हो गया कि लड़कियों को शिक्षा देने से वे शादी के बाद जल्दी विधवा हो जाती है । बदलते राजनितिक परिदृश्य के साथ महिलाओ के जीवन में भी बदलाव आने शुरू हो गए । महिलाओ के विरुद्ध अनेक कुप्रथाओ का जन्म हुआ । फिर भी अनेक धनी परिवारों ने अपने घरो पर लड़कियों की शिक्षा के प्रबंध किये । मध्यकालीन भारत में कुछ उच्च शिक्षित महिलाओ के बारे में हमे जानकारी मिलती है[1] । सल्तनत काल में इल्तुतमिश ने अपनी लड़की रजिया सुल्तान की शिक्षा का उचित प्रबंध किया था जिसकी काबलियत देखकर उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया । मुग़ल शासको ने भी शाही महिलाओ की शिक्षा के समुचित प्रबंध किये । इस काल में हमे अनेक ऐसी शाही महिलाओ के उदाहरण देखने को मिलते है ।

गुलबदन बेगम

गुलबदन बेगम मुग़ल काल में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह बाबर की पुत्री और हुमांयू की बहन थी। कहा जाता है कि माहम बेगम ने हिन्दाल और गुलबदन बेगम को गोद लिया था। गुलबदन बेगम की प्रारम्भिक शिक्षा महाम बेगम की देखरेख में शुरू हुयी[2] । गुलबदन की शादी ख्वाजा खान से कर की गयी। हुमांयू अपनी बहन से बहुत प्यार करता था। गुलबदन शिक्षित होने के कारण अपना अधिकतर समय ज्ञान अर्जित करने में लगाती थी। यह फ़ारसी और तुर्की भाषा की अच्छी जानकर थी । उसके अंदर हमेशा कुछ न कुछ सीखने की लालसा रहती थी । अकबर उसका बहुत आदर करता था तथा उसका तम्बू हमेशा अपने शाही तम्बू के पास ही लगवाता था जिसके कारण गुलबदनम राजनितिक और प्रशासनिक ज्ञान प्राप्त कर पाती थी[3]। गुलबदन कई भाषाओ की जानकार थी। कहा जाता है कि वह अपना खाली समय कविताये लिख कर बिताती थी। गुलबदन बेगम ने अकबर के कहने पर हुमांयुनामा लिखा था। इस ग्रंथ से हुमायु के शासनकाल की सामाजिक राजनितिक आदि स्थिति का पता चलता है। हुमांयुनामा की रचना ने गुलबदन को इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है । इस ग्रंथ में गुलबदन ने साधारण भाषा का प्रयोग किया है। यह शोध करने वाले विधार्थियो के लिए एक महत्वपूर्ण सामग्री है। गुलबदन बेगम ने अपनी पुस्तक में बेगमो आदि को क्या क्या मिला जब बाबर ने उनके लिए उपहार भेजे थे, उसका पूरा विवरण दिया है[4]। ८० वर्ष की आयु में गुलबदन बेगम का देहांत हो गया ।

हमीदा बानो बेगम

हमीदा बानो बेगम हुमायु के भाई हिन्दाल के गुरु मेरे बाबा दोस्त की पुत्री थी। यह सुंदर एवं उच्च शिक्षित महिला थी। कहा जाता है की यह बातचीत करने की कला में माहिर थी । अकबर का जन्म हमीदा के गर्भ से ही हुआ था [5] । गुलबदन बेगम के अनुसार जैसे ही बादशाह हुमायु की नजर हमीदा पर पड़ी हुमांयू बेचैन हो गया और पूछ बैठा कि ये कौन है तो जैसा एक शिक्षित व संस्कारित यौवना को बादशाह की उपस्थिति में व्यवहार करना चाहिए बिलकुल वैसा ही व्यवहार हमीदा ने दर्शाया[6]। हमीदा एक शक्तिशाली चरित्र की महिला थी। पहले तो उसने हुमांयू के शादी के प्रस्ताव को साफ़ इंकार कर दिया था और कहा था कि यह असमान जोड़ी होगी[7]। हुमायु ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मीरबाबा दोस्त की पुत्री उसके पैगाम को ठुकरा देगी[8]। किन्तु दिलदार बेगम के चालीस दिनों तक हमीदा को समझाने बाद हुमांयू ने मीर अबुल बका को शादी की रस्मो को पूरा करने के लिए बुलाया[9]। हमीदा मुग़ल काल की एक प्रभावशाली महिला थी ।

सलीमा सुल्ताना

सलीमा सुल्ताना मुग़ल काल की एक शिक्षित महिला थी , सलीमा बेग़म का निकाह बैरम खान से हुआ लेकिन कुछ ही समय बाद बैरम खान की मृत्यु के बाद उसका अकबर के साथ विवाह हो गया । कहा जाता है कि वह पढ़ने लिखने की शौकीन थी । फ़ारसी भाषा की अच्छी जानकार होने से उसने फ़ारसी भाषा में बहुत सी कविताओं की रचना की । फ़ारसी साहित्य में उसकी कविताओं का संग्रह दीवान नाम से प्रसिद्ध है । पुस्तके पढ़ना उसे अच्छा लगता था । कहा जाता है कि उसके पास एक पुस्तकालय था । वह अकबर के पुस्तकालय का भी प्रयोग करती थी[10] ।

नूरजहाँ

नूरजहाँ मिर्ज़ा गयासुद्दीन बेग की पुत्री थी । इसके बचपन का नाम मेहरुनिशा था जिसका अर्थ महिलाओ का सूर्य । आगे चलकर यह मुग़ल बादशाह जहांगीर की प्रिय पत्नी बन गयी । अल्पायु से ही इसकी अच्छी तरह देखभाल की गयी जिससे वह ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रो में श्रेष्ठ हो गयी । नूरजहाँ संगीत, नृत्य , चित्रकला , घुड़सवारी आदि कलाओ में पारंगत हो गयी थी । १७ साल की आयु में इसका विवाह अली कुली से हुआ जिसे शेर अफगान भी कहा जाता है । यह बंगाल का गवर्नर था । शेर अफगान की मृत्यु के बाद १६११ ईस्वी में जहांगीर ने नूरजहां से विवाह किया तथा उसे नूरमहल अर्थात महल की रोशनी तथा नूरजहां अर्थात संसार का प्रकाश नाम दिया[11] । नूरजहां एक उच्च शिक्षित महिला थी जो अरबी एवं फ़ारसी में कविताये लिखती थी । वह मख़फ़ी नाम से बहुत सुंदर कविताये लिखती थी जिसका वर्णन

ख़फ़ी खान ने अपनी पुस्तक मुन्तख़ब उल लबाब में दिया है । नूरजहां अपने समय के प्रसिद्ध कवियों को आश्रय प्रदान करती थी[12] । उसने अपनी पसंद की किताबो का एक पुस्तकालय बनाया हुआ था । नूरजहां को साहित्यिक कार्यो के साथ राजनितिक कार्यो में रूचि थी । नूरजहाँ अपने काल की सभी महिलाओ से गुणों में श्रेष्ठ थी ।

मुमताज महल

मुमताज महल का नाम अर्जुमंद बानो बेगम था । यह बादशाह शाहजहाँ की प्रिय बेगम थी । यह नूरजहां की भतीजी थी । इसके पिता का नाम असरफ खान था । मुमताज एक उच्च शिक्षित महिला थी । इसे संगीत एवं चित्रकारी से बड़ा लगाव था । यह अरबी और फ़ारसी भाषा की अच्छी जानकार थी[13] । यह फ़ारसी भाषा में लेखन कार्य भी करती थी । यह अपनी सन्तानो की शिक्षा के लिए भी सचेत थी । मुमताज के पास एक महिला नाजिर भी थी जो मुमताज से गरीब छात्रों के लिए अनुदान की सिफारिश करती थी । मुमताज उच्च शिक्षित महिला होने के साथ साथ राजनितिक एवं प्रशासनिक कार्यो में भाग लेती थी । शाहजहां इसे बहुत प्यार करता था ।

जहाँआरा बेगम

जहाँआरा शाहजहां की बड़ी लड़की थी । इसका जन्म अप्रैल १६१४ ईस्वी में हुआ था । शिक्षा ग्रहण करने में इसकी रूचि थी । इसकी शिक्षक सतीउन्न -निशा थी जो स्वयं अच्छी शिक्षित महिला थी । फ़ारसी भाषा का उसने अध्ययन किया था । इसने दो प्रसिद्ध ग्रंथो की रचना की - मुनीश उल अरवाह जिसमे सूफी संत मुईनुद्दीन चिश्ती की जीवनी है तथा दूसरा शबिया जिसमे उसके धार्मिक गुरु मुल्ला शाह बदखशी की जीवनी है । इसने आगरा में जामी मस्जिद के पास एक मदरसा तथा कश्मीर में मुल्ला बदख्शानि मस्जिद का निर्माण करवाया[14] ।

जैबुननिशा-

यह औरंगजेब की बड़ी पुत्री थी । इसकी रूचि बचपन से ही पढ़ाई में थी । इसकी पहली शिक्षिका रोशनआरा बेगम थी । औरंगजेब ने हाफीजा मरियम को जेबुनिसा का शिक्षक नियुक्त किया था जो स्वयं सुशिक्षित महिला थी । छोटी उम्र में ही इसने अरबी भाषा पर अपनी अच्छी पकड़ बना ली थी । अन्य शिक्षकों के निर्देशन में उसे अरबी एवं फ़ारसी दोनों भाषाओ की अच्छी जानकारी हो गयी थी । सैय्यद असरफ के निर्देशन में वह एक योग्य कवयित्री बन गयी थी । जेबुनिसा ने एक साहित्यिक संस्था तथा

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

एक पुस्तकालय का निर्माण विद्यार्थियो के लिए कराया था जिसमे विभिन्न विषयो की अनेक पुस्तके थी । यह अपना अधिकतर समय पुस्तके पढ़ने में बिताती थी ।

मुग़ल काल में उपर्युक्त शाही महिलाओ के अतिरिक्त अनेक महत्वपूर्ण महिलाये थी जो उच्च शिक्षित थी। इनमे हुमायु की पत्नी बेगा बेगम, जिसे हाजी बेगम के नाम से जाना जाता था, पत्र लेखन में बहुत कुशल थी। इसने अपने पति के मकबरे का पास मदरसा खोला था[15]। शाहजहां की पुत्री जैबीदा बेगम ने भी अनेक रहस्यवादी कविताओं की रचना की थी ।[16] औरंगजेब की लड़किया जीनत उन निशां एवं बदरुन्न निशां भी शिक्षित महिलाये थी। कहा जाता है कि बद्र उन् निशां ने कुरान को कंठस्थ कर लिया था।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते है कि मध्यकालीन भारत में मुग़ल घराने में काफी शिक्षित महिलाये थी। हालाँकि ऐसी महिलाओ को संख्या कम थी लेकिन इनमे से कुछ ने कला कानून, धर्म आदि में प्रसिद्धि प्राप्त की थी। मुग़ल बादशाहो ने भी इन महिलाओ को शिक्षा का समुचित प्रबंध किया था ।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

संदर्भ सूची

१. डॉ ए. एस अल्तेकर, एजुकेशन इन अन्सिएंट इंडिया , पृष्ठ २२०-३२
२. गुलबदन बेगम , हुमांयुनामा , इंट्रोडक्शन बी मिसेज बेवरिज , पृष्ठ ९
३. उपरोक्त , पृष्ठ ६७
४. गुलबदन बेगम, हुमांयुनामा हिंदी अनुवाद ब्रजरतनदास, पृष्ठ १७
५. चतुर्वेदी हेरम्ब , दास्ताँ मुग़ल महिलाओ की , पृष्ठ ८१
६. उपरोक्त , पृष्ठ ८४
७. गुलबदन बेगम , पूर्वोक्त , पृष्ठ १५१
८. चतुर्वेदी हेरम्ब , पूर्वोक्त, पेज ८७
९. शीरी मूसवी , अकबर के जीवन की कुछ घटनाएं , हिंदी अनुवाद उमेश दत्त दीक्षित द्वारा , पेज . ५
१०. जीनत कोसर , मुस्लिम वीमेन इन मिडिवल इंडिया , पेज १५५
११. जहांगीर , तुजुक ए जहांगीरी वॉल्यूम -१ इंग्लिश अनुवाद रॉज़र्स एवं बेवरिज , पेज ३१९
१२ . जीनत कैसर, पूर्वोक्त, पेज १५७
१३. एडवर्ड एंड गैरट, मुग़ल रूल इन इंडिया , पेज १६०

१४. हुसैन युसूफ, ग्लिंप्सीस ऑफ़ मिडिएवेल इंडियन कल्चर, पेज ८६ , इंट्रोडूसिंग इंडिया भाग -१ पेज १०१

१५. रेखा मिश्रा, वीमेन इन मुग़ल इंडिया, पेज ९२

१६ एस. एस. जाफर, एजुकेशन इन मुस्लिम इंडिया, पेज १९६